आपने लिखा

शैक्षणिक संदर्भ अंक-98, मई-जून 2015 प्राप्त हुआ। इस अंक में सौरभ रॉय का लेख 'भाषा शिक्षण-समग्र भाषा पद्धति - भाग-2' मैंने बहुत गम्भीरता से पढ़ा। लेख में कविता सुनना और पढ़ना, लेखन, से लेकर कक्षा का वातावरण, अभिभावकों की भागीदारी, आकलन आदि विविध महत्वपूर्ण बातों को भाषा शिक्षण का हिस्सा बनाया गया है। लेखक ने एक तरह से स्वैच्छिक शिक्षक समूह के काम करने के अनुभव को साझा करते हुए एक बेहतरीन शुरुआत की है। शिक्षकों के साथ बात करने में यह आलेख मुझे काफी मददगार साबित हुआ है।

इन दिनों धमतरी विकास खण्ड में धमतरी, छाती और बोडराड़ी में 30-40 शिक्षकों ने अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साथ मिलकर तीन स्वैच्छिक शिक्षक समूह शुरू किए हैं और अलग-अलग अकादमिक मुद्दों पर चर्चा करने की पहल हो रही है। इन शिक्षकों के साथ की चर्चाओं में एकलव्य भोपाल से प्रकाशित पत्रिका *संदर्भ, चकमक, स्रोत* और विद्याभवन से प्रकाशित *खोजें और जानें* तथा *शिक्षा की बुनियाद* जैसी शैक्षणिक पत्रिकाओं के आलेखों का बड़ा योगदान देखा जा रहा है।

संदर्भ के आलेख का अपना एक अलग ही महत्व है। शिक्षकों के साथ चर्चा को खोलने और चर्चा को गम्भीरता की ओर ले जाने में इसके लेख काफी मददगार साबित हो रहे हैं। 'शिक्षकों की कलम से' के अन्तर्गत छपते लेख शिक्षकों के लिए प्रोत्साहन हैं। इसी अंक मे छपा लेख 'पाठ योजना - विविध मान्यताओं की पड़ताल' जिसे शोभा सिन्हा ने लिखा है, काफी समसामयिक लगा। पिछले दिनों चर्चा के दौरान बात निकलकर आई थी कि शिक्षक के लिए पाठ-योजना केवल सेवा-पूर्व शिक्षक-शिक्षा के लिए ही है या सेवा कालीन शिक्षा में भी इसकी भूमिका है। सेवाकाल में शिक्षक मित्रों को इसकी सर्वाधिक ज़रूरत लगती है। आज रेमेडियल की नहीं, कक्षागत बेहतर शिक्षण प्रक्रिया की ज़रूरत है जिससे बच्चों को बेहतर शिक्षा मुहैया कराई जा सके। हमारा सबसे बड़ा हथियार हमारी पाठ-योजना और शिक्षण-पूर्व तैयारी है जिससे गुणात्मकता को सुनिश्चित किया जा सकता है। डॉक्टर के सामने मरीज़ की लम्बी कतार होने के बाद भी एक-एक मरीज़ को पूरी गम्भीरता से देखने के बाद ही डॉक्टर समुचित उपचार का रास्ता निकालता है तो हम कक्षा के हरेक बच्चे के लिए ऐसी योजना क्यों नहीं बनाते? *संदर्भ* के इस अंक के लिए पूरे सम्पादन समूह को बधाई।

नरेन्द्र 'नन्द'
अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन
धमतरी, छत्तीसगढ़

संदर्भ का अंक-99 पढ़ा। सबसे पहले अपने प्रकाशित हुए पत्र को देखकर खुशी हुई। यह पहला मौका था जब किसी शैक्षिक पत्रिका में मेरा पत्र प्रकाशित हुआ। इस अंक में अब्दुल कलाम का लेख 'बहुभाषिता और शिक्षक' पढ़ा। लेख को पढ़ते समय

मेरे मन में कार्यशालाओं के दौरान मिलने वाली शिक्षकों की प्रतिक्रियाएँ ज़ेहन में ताज़ा हो गईं। यह मुश्किल स्कूल से लेकर हमारे आस-पड़ोस सभी जगह देखने को मिलती है कि किस तरह लोग अपनी भाषा (क्षेत्र-विशेष की भाषा) बोलने से कतराते हैं। यदि कोई व्यक्ति बातचीत में किसी स्थानीय भाषा के शब्द का उपयोग कर ले तो लोग उसे हिकारत की नज़र से देखते हैं। यह धारणा बनी हुई है कि सभ्य समाज में तो मानक भाषा ही बोली जाती है जो कि हमारे लिए हिन्दी है। यह स्थिति क्यों है, इस पर गम्भीरता से सोचने की ज़रूरत है। बहुभाषिता को कक्षा में एक संसाधन के रूप में इस्तेमाल करने की बजाय उसे एक मुश्किल के तौर पर देखा जाता है और इस कारण कई बच्चे अपनी भाषा का प्रयोग स्कूल में नहीं करते हैं और इस कारण वे स्कूल में चल रही प्रक्रियाओं से कट जाते हैं। शिक्षक भी उन्हें हिन्दी पढ़ाने और सिखाने पर ही तुले रहते हैं क्योंकि उन पर भी पाठ्यक्रम पूरा कराने का इतना दबाव होता है कि वे कुण्ठा से ग्रस्त हो जाते हैं, और बच्चे स्कूल से बाहर। इतना सब होने के बाद भी हमारी भाषा की पाठ्य पुस्तकों में इसका कोई विकल्प न तो पाठों में दिखाई देता है और न ही पाठ के अभ्यासों में। इसका सीधा-सा अर्थ यह निकलता है कि इस बारे में कभी गहराई से सोचा ही नहीं गया। यदि यह चिन्ताओं व विमर्श का विषय होता तो शायद इसके लिए किताबों में भी जगह दी जाती और इसको लेकर इतनी जड़ता भी नहीं होती।

प्रेरणा मालवीय
अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन,
भोपाल, म.प्र.

कब खत्म हो रहा है आपका सदस्यता शुल्क?

आम तौर पर *संदर्भ* के लिफाफे पर एक स्टीकर पर आपका पता, सदस्यता क्रमांक व समाप्ति का अंक क्रमांक लिखा होता है। उदाहरण के लिए

SAND 12854 Ends On 100

इसका मतलब है आपका सदस्यता क्रमांक 12854 है और सदस्यता अंक 100 पर समाप्त हो रही है।

यानी 100वाँ अंक प्राप्त होने से पहले आप अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करवा लीजिए।